



सुचरित्र की पुनर्स्थापना: डॉ. अंबेडकर का बौद्ध विमर्श

डॉ आशुतोष कुमार सिंह, पोस्ट डॉक्टोरल फेलो (भारतीय सामाजिक अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली), समाज कार्य विभाग, हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला, हिमाचल प्रदेश. Email: sashutosh787@gmail.com, Mobile: 7355005576

सारांश

डॉ. भीमराव अंबेडकर एक दूरदृष्टा विचारक, समाज सुधारक और बौद्ध दर्शन के अग्रणी प्रवर्तक थे, जिन्होंने भारतीय समाज को जातिगत बंधनों से मुक्त करने के लिए बौद्ध धर्म को एक सशक्त माध्यम के रूप में अपनाया। 1956 में उनका बौद्ध धर्म ग्रहण करना मात्र एक धार्मिक परिवर्तन न होकर सामाजिक न्याय, समानता, करुणा और आत्मसम्मान पर आधारित एक व्यापक नैतिक-सामाजिक क्रांति का प्रतीक था। उनका दृढ़ विश्वास था कि सच्चा धर्म वह है, जो व्यक्ति को जन्म, जाति या लिंग के आधार पर नहीं, बल्कि उसकी आंतरिक योग्यताओं और नैतिक आचरण के आधार पर आंकता है।

इस पाठ में बुद्ध के उपदेशों के आलोक में मानव पतन के प्रमुख कारणों—असदाचार, आलस्य, माता-पिता की अवहेलना आदि—का विवेचन किया गया है। साथ ही, चार प्रकार के व्यक्तियों—स्वार्थी, परोपकारी, निष्क्रिय और संतुलित—का विश्लेषण प्रस्तुत करते हुए यह स्पष्ट किया गया है कि सच्चा न्यायप्रिय वही होता है, जो स्वयं के उत्थान के साथ-साथ समाज के कल्याण के लिए भी सतत प्रयासशील रहता है। शुभ संकल्पों और सत्कर्मों की अनिवार्यता को रेखांकित करते हुए यह पाठ आत्मोन्नति तथा सामाजिक समरसता की दिशा में मार्ग प्रशस्त करता है।

प्रस्तावना

भारतीय समाज के इतिहास में कुछ ऐसे महापुरुष हुए हैं, जिन्होंने न केवल अपने विचारों से समाज को प्रभावित किया, बल्कि अपने जीवन के हर पल में सामाजिक परिवर्तन के लिए संघर्ष किया। डॉ. भीमराव अम्बेडकर ऐसे ही असाधारण व्यक्तित्व थे, जिन्होंने भारतीय सामाजिक-राजनीतिक परिदृश्य को मौलिक रूप से परिवर्तित किया। वे एक सार्वजनिक बौद्धिक, सामाजिक क्रांतिकारी और गहन विचारक थे, जिनमें अपार क्षमताएँ थीं। उन्होंने सामाजिक और राजनीतिक परिस्थितियों का व्यावहारिक विश्लेषण किया और अपने लेखन व भाषणों के माध्यम से अंतःविषयक दृष्टिकोणों को प्रभावी रूप से

प्रस्तुत किया। उनके विचार न केवल बौद्धिक विमर्श को समृद्ध करते थे, बल्कि समाज में संवेदना और आंदोलन भी उत्पन्न करते थे। उनके लेखन में वंचित वर्गों के प्रति न्याय और मुक्ति की गहरी प्रतिबद्धता झलकती है। उन्होंने न केवल समाज के हाशिए पर खड़े लोगों के उत्थान के लिए अपना जीवन समर्पित किया, बल्कि समन्वय और सामाजिक समरसता के विचारों से राष्ट्रीय चेतना को भी प्रेरित किया। यह खंड उनके विचारों की समकालीन प्रासंगिकता को रेखांकित करते हुए डॉ. अंबेडकर के पुनःपाठ की संभावनाओं को नए संदर्भों में प्रस्तुत कर सकता है।

जन्म से ही जाति व्यवस्था की कठोर परिधि में फँसे अम्बेडकर ने अपने जीवन को समाज के सबसे वंचित वर्ग की मुक्ति और समानता के संघर्ष में समर्पित कर दिया। उनका संघर्ष केवल कानूनी अधिकारों तक सीमित नहीं था, बल्कि वह मानवीय गरिमा और आत्म-सम्मान की लड़ाई थी। 1956 में बौद्ध धर्म को अपनाने का उनका निर्णय एक गहन चिंतन और दार्शनिक परिवर्तन का परिणाम था। यह केवल एक धार्मिक परिवर्तन नहीं, बल्कि एक व्यापक सामाजिक-नैतिक क्रांति का प्रतीक था। अम्बेडकर ने बौद्ध धर्म में वह शक्ति देखी, जो समानता, करुणा और आत्म-सम्मान के मूल्यों को केंद्र में रखती है। उनका मानना था कि सच्चा धर्म वह है, जो मनुष्य को मनुष्य के समान देखे, जो जाति, वर्ग, लिंग या किसी अन्य भेदभाव से ऊपर उठकर मानवीय मूल्यों की स्थापना करे। बौद्ध धर्म उनके लिए एक ऐसा मार्ग था, जो व्यक्ति को उसकी आंतरिक क्षमताओं के आधार पर आंका जाए, न कि उसके जन्म या पारिवारिक पृष्ठभूमि के आधार पर।

इस शोध पत्र में हम डॉ. अम्बेडकर के बौद्ध चिंतन को समझने का प्रयास करेंगे - कि कैसे उन्होंने बौद्ध धर्म को सदाचार और सुचरित्र की पुनर्स्थापना का माध्यम माना, और कैसे उनका यह विमर्श भारतीय समाज के लिए एक नई दिशा और दृष्टि लेकर आया।

धम्म तभी सद्धम्म कहलाता है जब वह यह शिक्षा दे कि मात्र प्रजा ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि उसके साथ शील का होना अनिवार्य है। प्रजा आवश्यक है, किंतु शील उससे अधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि शील के अभाव में प्रजा विनाशकारी बन सकती है। प्रजा, मनुष्य के हाथ में दुधारी तलवार के समान होती है, जो यदि किसी शीलवान व्यक्ति के पास हो, तो संकटग्रस्त लोगों की रक्षा के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकती है; किंतु यदि वही प्रजा किसी शीलरहित व्यक्ति के हाथ में हो, तो वह विनाश और हिंसा का साधन बन सकती है। अतः शील, प्रजा से अधिक महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि ज्ञान का सही उपयोग मनुष्य के शील पर निर्भर करता है।

प्रजा, विचारधम्म या सही चिंतन है, जबकि शील, सदाचार और सही आचरण का धम्म है। भगवान बुद्ध ने शील के संबंध में पाँच मूल सिद्धांत स्थापित किए हैं, जो मनुष्य को जीवन के सही मार्ग पर चलने की प्रेरणा देते हैं। ये पाँच सिद्धांत क्रमशः अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य तथा मद्य-निषेध

से संबंधित हैं। उन्होंने उपदेश दिया कि मनुष्य को जीव-हिंसा, चोरी, असत्य भाषण, काम-भोग संबंधी मिथ्याचार और नशीले पदार्थों के सेवन से विरत रहना चाहिए। इससे स्पष्ट होता है कि बुद्ध ने ज्ञान की अपेक्षा शील को अधिक महत्व दिया, क्योंकि ज्ञान का मूल्य और प्रभाव व्यक्ति के शील पर निर्भर करता है। यदि शील से पृथक होकर ज्ञान का प्रयोग किया जाए, तो वह किसी भी सशक्त समाज की रचना नहीं कर सकता।

बुद्ध ने एक स्थान पर कहा है कि संसार में शील अतुलनीय है। उन्होंने शील को आरंभ, आधार और शरणस्थान कहा है तथा इसे समस्त कल्याण का उद्गम स्रोत माना है। शील ही समस्त उत्तम अवस्थाओं का मूल है, इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को अपने शील को शुद्ध करने का प्रयास करना चाहिए।

सुचरित्र बनाए रखने हेतु प्रवचन:

मनुष्य के पतन के कारण

श्रावस्ती के समीप, अनाथपिंडिक के जेतवन में तथागत विराजमान थे। एक रात्रि, जब सारा जेतवन आभायुक्त हो उठा, एक देवता तथागत के समीप आया। उसने श्रद्धापूर्वक प्रणाम कर निवेदन किया—

"हे गौतम! मैं एक जिज्ञासा लेकर उपस्थित हुआ हूँ। कृपया यह बताने की कृपा करें कि मनुष्य का पतन किन कारणों से होता है?"

तथागत ने उत्तर देते हुए कहा—

"मनुष्य की उन्नति और पतन स्पष्ट रूप से पहचानी जा सकती है। जो धर्म (धम्म) से प्रेम करता है, वह उन्नति की ओर अग्रसर होता है, जबकि जो धर्म से विमुख होता है, वह पतन की ओर जाता है।"

इसके पश्चात तथागत ने मनुष्य के पतन के विभिन्न कारणों को विस्तारपूर्वक बताया—

1. **असदाचार में रुचि** - जो मनुष्य सज्जनों की उपेक्षा कर दुष्ट प्रवृत्ति के व्यक्तियों का संग करता है और उनकी विचारधारा को अपनाता है, वह पतन की ओर अग्रसर होता है।
2. **आलस्य और प्रमाद** - जो व्यक्ति निष्क्रिय, आलसी, व्यर्थ की भीड़ में मग्न रहने वाला, परिश्रम से जी चुराने वाला तथा क्रोध में शीघ्र आ जाने वाला होता है, उसका पतन सुनिश्चित है।

3. **माता-पिता की उपेक्षा** - वह व्यक्ति जो संपन्न होते हुए भी अपने वृद्ध माता-पिता की सेवा नहीं करता, जिन्होंने अपना संपूर्ण जीवन उसके लिए समर्पित कर दिया, वह पतन को प्राप्त होता है।
4. **असत्य और छल** - जो व्यक्ति झूठ बोलकर, छल-कपट द्वारा सत्पुरुषों, श्रमणों, या संतों को धोखा देता है, वह अधःपतन का भागी होता है।
5. **स्वार्थपरक जीवन** - जिस व्यक्ति के पास पर्याप्त संपत्ति होते हुए भी वह केवल अपने लिए उपभोग करता है और दूसरों के कल्याण की चिंता नहीं करता, उसका पतन अवश्यंभावी है।
6. **अहंकार और अविवेक** - जो व्यक्ति अपने जन्म, कुल, जाति, वंश या संपत्ति के अहंकार में अपने ही संबंधियों को तुच्छ समझता है और उनका अपमान करता है, वह विनाश की ओर बढ़ता है।
7. **असंयम और दुराचरण** - जो व्यक्ति व्यभिचारी, मद्यपान करने वाला, जुआ खेलने वाला और अपनी अर्जित संपत्ति को ऐश्वर्यपूर्ण भोग-विलास में व्यर्थ गँवा देता है, वह पतन को प्राप्त होता है।
8. **विवाहेतर संबंध** - जो व्यक्ति अपनी पत्नी से संतुष्ट न रहकर वेश्याओं या अन्य स्त्रियों के साथ संबंध रखता है, उसका नैतिक पतन निश्चित है।
9. **अयोग्य व्यक्ति को अधिकार देना** - जो व्यक्ति असंयमी, अपव्ययी और अयोग्य व्यक्ति को महत्वपूर्ण दायित्व सौंपता है, वह स्वयं पतन की ओर बढ़ता है।
10. **अवास्तविक महत्वाकांक्षा** - जो व्यक्ति अल्प साधनों के होते हुए भी अत्यधिक महत्वाकांक्षा रखता है और अनुचित उपायों से राजसत्ता प्राप्त करने का प्रयास करता है, वह अपने विनाश का मार्ग स्वयं प्रशस्त करता है।

"हे देव! इन समस्त कारणों को भलीभांति समझ लो। यदि तुम इनसे बचने का प्रयास करोगे, तो तुम पतन से सुरक्षित रहोगे और सन्मार्ग पर अग्रसर हो सकोगे।"

इस प्रकार तथागत ने मनुष्य के चारित्रिक उत्थान और पतन के रहस्यों को उजागर किया, जिससे प्रत्येक साधक अपने जीवन को सत्कर्म्मों द्वारा पवित्र और उच्चतम आध्यात्मिक लक्ष्य के अनुरूप बना सके।

दुष्ट मनुष्य के लक्षण

तथागत, अपनी चर्चा के दौरान, भिक्षुओं के साथ विहार करते हुए, उन्हें उपदेश देते थे। एक दिन, अपने नियम के अनुसार, उन्होंने भिक्षुओं को संबोधित कर एक महत्वपूर्ण विषय पर चर्चा की।

उन्होंने भिक्षुओं से प्रश्न किया— "क्या तुम जानते हो कि दुष्ट मनुष्य की पहचान क्या होती है?"
भिक्षुओं ने उत्तर दिया— "नहीं, भगवन्!"

इस पर तथागत ने कहा— "मैं तुम्हें दुष्ट मनुष्य के लक्षण बतलाता हूँ।"

1. **परनिंदा में रुचि** - कुछ मनुष्य ऐसे होते हैं जो दूसरों की त्रुटियों और दुर्गुणों को न केवल पूछे जाने पर, बल्कि बिना किसी आग्रह के भी विस्तृत रूप से प्रकट करते हैं। यदि उनसे बार-बार पूछा जाए, तो वे और भी अधिक खुलकर दूसरों की निंदा करते हैं। ऐसा मनुष्य निश्चित रूप से दुष्ट कहा जाता है।
2. **सत्कर्मों का अवलोकन न करना** - कुछ मनुष्य दूसरों के सत्कर्मों और श्रेष्ठ गुणों की चर्चा न तो स्वेच्छा से करते हैं और न ही पूछे जाने पर। यदि कोई बार-बार आग्रह करे, तो वे अनिच्छा से ही दूसरों की प्रशंसा करते हैं। ऐसा व्यक्ति भी दुष्ट प्रवृत्ति का होता है।
3. **स्वयं के अवगुणों को छिपाना** - कुछ लोग ऐसे होते हैं जो अपने दोषों को स्वेच्छा से प्रकट नहीं करते, और पूछे जाने पर भी उन्हें छिपाते हैं। यदि बार-बार पूछा जाए, तो वे अनिच्छा से ही अपने अवगुण स्वीकार करते हैं। ऐसा व्यक्ति भी दुष्ट प्रवृत्ति का होता है।
4. **स्वयं की श्रेष्ठता का अभिमान** - कुछ व्यक्ति अपने सद्गुणों का बिना पूछे ही प्रचार करने में रुचि रखते हैं। यदि उनसे पूछा जाए, तो वे अपनी प्रशंसा को और भी विस्तृत रूप से प्रस्तुत करते हैं, बिना किसी संकोच या लज्जा के। इस प्रकार का व्यक्ति भी दुष्ट स्वभाव का ही माना जाता है।

"भिक्षुओं! जो मनुष्य इन प्रवृत्तियों में लिप्त होता है, उसे दुष्ट कहा जाता है। इन दोषों से बचना ही सच्ची साधना है, जिससे मनुष्य उत्तम मार्ग की ओर अग्रसर हो सकता है।"

इस प्रकार तथागत ने दुष्ट प्रवृत्ति के मनुष्यों की पहचान स्पष्ट की, जिससे भिक्षुजन और साधकजन सन्मार्ग पर चलते हुए आत्मविकास के पथ पर अग्रसर हो सकें।

सर्वश्रेष्ठ मनुष्य का स्वरूप

तथागत, अपनी चारिका के समय, भिक्षुओं को उपदेश देते हुए कहते हैं—

"भिक्षुओ! इस संसार में चार प्रकार के मनुष्य पाये जाते हैं।"

1. जो न स्वयं के कल्याण का प्रयास करता है और न ही दूसरों के लिए कुछ करता है।
2. जो केवल दूसरों के हित के लिए प्रयास करता है, किंतु अपने कल्याण की चिंता नहीं करता।

3. जो स्वयं के उत्थान के लिए प्रयत्नशील रहता है, किंतु दूसरों के कल्याण की उपेक्षा करता है।
4. जो न केवल अपने कल्याण का, बल्कि दूसरों के हित का भी प्रयास करता है।

तथागत आगे कहते हैं—

"जो व्यक्ति न तो स्वयं का कल्याण करता है और न ही दूसरों का, वह श्मशान में पड़ी उस निष्प्रयोज्य लकड़ी के समान है, जो दोनों सिरों से जली हुई हो और मध्य में गोबर से पुती हो। ऐसी लकड़ी न तो गृहस्थ जीवन में उपयोगी होती है और न ही वन में किसी काम आती है। उसी प्रकार, ऐसा व्यक्ति संसार के लिए भी निष्फल है और स्वयं के लिए भी।"

"जो व्यक्ति अपने सुख और सुविधा का त्याग कर केवल दूसरों के कल्याण के लिए प्रयत्नशील रहता है, वह श्रेष्ठ व्यक्तियों में गिना जाता है।"

"किन्तु, भिक्षुओ! जो न केवल स्वयं के कल्याण का, बल्कि दूसरों के उत्थान का भी समुचित प्रयास करता है, वही इन चारों में सर्वश्रेष्ठ, प्रधान, सर्वोपरि, उच्चतम और परम कल्याणकारी होता है।"

इस प्रकार तथागत ने भिक्षुओं को आत्मकल्याण और परोपकार की महानता का संदेश दिया, जिससे वे सच्चे अर्थों में एक श्रेष्ठ मानव बनने की दिशा में अग्रसर हो सकें।

प्रबुद्ध मनुष्य का स्वरूप

एक समय तथागत उक्कट्ठ और सेतब्बय नामक नगरों के बीच महापथ पर पहुँचे। उसी समय, द्रोण नामक एक ब्राह्मण भी उसी मार्ग से गुजर रहा था।

तथागत ने सड़क छोड़कर एक वृक्ष के नीचे पद्मासन में शांत भाव से ध्यानस्थ होकर आसन ग्रहण किया। उनके तेजोमय स्वरूप, संयमित इंद्रियों, एकाग्रचित्तता, आंतरिक शक्ति और शांति को देखकर द्रोण ब्राह्मण उनके समीप पहुँचा और जिज्ञासावश पूछने लगा—

"आदरणीय! क्या आप कोई देवता हैं?"

तथागत ने उत्तर दिया— "ब्राह्मण, मैं निस्संदेह कोई देवता नहीं हूँ।"

"तो क्या आप कोई गंधर्व हैं?"

"ब्राह्मण, मैं गंधर्व भी नहीं हूँ।"

"तो क्या आप कोई यक्ष हैं?"

"ब्राह्मण, मैं यक्ष भी नहीं हूँ।"

"क्या फिर आप एक सामान्य मनुष्य हैं?"

"ब्राह्मण, मैं एक सामान्य मनुष्य भी नहीं हूँ।"

तथागत के इन उत्तरों से विस्मित होकर द्रोण ब्राह्मण ने पुनः पूछा—

"हे आदरणीय! यदि आप न देवता हैं, न गंधर्व, न यक्ष और न ही सामान्य मनुष्य, तो फिर आप कौन हैं?"

तब तथागत ने उत्तर दिया—

"ब्राह्मण, जब तक मैं सांसारिक आसवों (क्लेशों) से मुक्त नहीं हुआ था, तब तक मैं भी एक देवता, गंधर्व, यक्ष या सामान्य मनुष्य के रूप में जाना जाता था। किंतु अब मैं उन समस्त बंधनों से विमुक्त हो चुका हूँ। ये आसव अब कटे हुए ताड़ वृक्ष की भांति हो गए हैं, जिनका मूल नष्ट हो गया है और जिनकी पुनरुत्पत्ति संभव नहीं है।"

"जिस प्रकार कमल या कुमुदिनी जल में उत्पन्न होते हुए भी, उसमें विकसित होते हुए भी, जल से ऊपर उठकर निर्लिप्त और अछूते बने रहते हैं, ठीक उसी प्रकार, हे ब्राह्मण! संसार में जन्म लेने के बावजूद, संसार में जीवन व्यतीत करने के बावजूद, मैं अब इस संसार से अतीत, निर्लिप्त और अछूता हो चुका हूँ।"

"अतः, हे ब्राह्मण! अब तुम मुझे प्रबुद्ध पुरुष (बुद्ध) के रूप में जानो।"

इस प्रकार, तथागत ने अपने ज्ञान, आत्मबोध और निर्वाण की पराकाष्ठा को स्पष्ट किया, जिससे मनुष्य आत्मशुद्धि, सत्य और आत्मोन्नति के मार्ग को पहचान सके।

न्यायी और सज्जन मनुष्य का स्वरूप

एक अवसर पर तथागत ने भिक्षुओं को संबोधित करते हुए कहा—

"भिक्षुओ! इस संसार में चार प्रकार के मनुष्य पाये जाते हैं। यदि तुम न्यायी और सज्जन मनुष्य की पहचान करना चाहते हो, तो इनके गुणों को भली-भाँति समझो।"

(१) जो केवल अपने कल्याण का प्रयास करता है

"भिक्षुओ! एक प्रकार के मनुष्य वे होते हैं, जो केवल अपने कल्याण की चिंता करते हैं, किंतु दूसरों के हित के लिए कोई प्रयास नहीं करते।"

"ऐसा मनुष्य अपने भीतर की वासनाओं (कामच्छन्द) को नियंत्रित करने का अभ्यास करता है, किंतु दूसरों को इस पथ पर प्रेरित नहीं करता। वह अपने क्रोध (व्यापाद) और अज्ञान (अविद्या) को मिटाने का प्रयास करता है, किंतु दूसरों को इस दिशा में प्रवृत्त नहीं करता।"

"निःसंदेह, ऐसा मनुष्य केवल अपने उद्धार का प्रयास करता है, परंतु दूसरों के कल्याण की उसे कोई चिंता नहीं होती।"

(२) जो केवल दूसरों के कल्याण का प्रयास करता है

"भिक्षुओ! कुछ मनुष्य ऐसे होते हैं, जो स्वयं को उपेक्षित रखते हुए केवल दूसरों के उत्थान का प्रयास करते हैं।"

"ऐसे व्यक्ति अपने भीतर के विकारों—वासनाओं, क्रोध और अज्ञान के उन्मूलन के लिए तो प्रयास नहीं करते, किंतु वे दूसरों को इनसे मुक्त होने की प्रेरणा देते हैं।"

"निःसंदेह, यह वह मनुष्य है, जो अपने उद्धार की परवाह न कर, केवल दूसरों के कल्याण हेतु प्रयास करता है।"

(३) जो न स्वयं के और न ही दूसरों के कल्याण का प्रयास करता है

"भिक्षुओ! कुछ मनुष्य ऐसे भी होते हैं, जो न तो स्वयं के कल्याण का प्रयास करते हैं और न ही दूसरों के हित की चिंता करते हैं।"

"ऐसा व्यक्ति न अपने भीतर की वासनाओं, क्रोध और अज्ञान को मिटाने का अभ्यास करता है और न ही दूसरों को इस दिशा में प्रवृत्त करता है।"

"निःसंदेह, यह वह मनुष्य है, जो न स्वयं के उद्धार का प्रयास करता है और न दूसरों के कल्याण का।"

(४) जो स्वयं और दूसरों-दोनों के कल्याण का प्रयास करता है

"भिक्षुओ! मनुष्यों का एक वर्ग ऐसा भी है, जो अपने आत्मोन्नयन के साथ-साथ दूसरों के उत्थान हेतु भी प्रयत्नशील रहता है।"

"ऐसा व्यक्ति न केवल स्वयं अपनी वासनाओं, क्रोध और अज्ञान का उन्मूलन करता है, बल्कि वह दूसरों को भी इसी मार्ग पर प्रेरित करता है।"

"निःसंदेह, यह वही व्यक्ति है, जिसने न केवल अपने उद्धार के लिए प्रयास किया, बल्कि दूसरों के कल्याण हेतु भी समर्पित रहा।"

"भिक्षुओ! यही मनुष्य न्यायी और सज्जन कहलाने योग्य है।"

तथागत के इन वचनों में यह स्पष्ट है कि सच्चा न्यायी और सज्जन वही होता है, जो आत्मकल्याण के साथ-साथ समाज के उत्थान में भी संलग्न रहता है।

शुभ-कर्म करने की अनिवार्यता

एक समय तथागत ने भिक्षुओं को संबोधित करते हुए कहा—

"भिक्षुओ! सत्कर्मों को करने से मत झिझको। 'शुभ-कर्म' यह कोई साधारण शब्द नहीं है, बल्कि यह स्वयं आनंद, सुख, मंगल और प्रियता का पर्याय है।"

"भिक्षुओ! मैं स्वयं इसका साक्षी हूँ कि मैंने चिरकाल तक शुभ-कर्मों के सुखद, वांछनीय, प्रिय और आनंददायक फलों का अनुभव किया है।"

शुभ-कर्मों के फल

"मैं प्रायः यह विचार करता हूँ कि वह कौन-से पुण्यकर्म हैं, जिनके परिणामस्वरूप मैं इस संतोष और सुख का अनुभव कर रहा हूँ?"

"इसका उत्तर यही मिलता है— तीन श्रेष्ठ कर्म: दान, शील और संयम।"

शुभ-कर्मों का मंगलकारी प्रभाव

"जिस घड़ी सत्पात्रों को दान दिया जाता है, जब शुभ-विचार, शुभ-वचन और शुभ-आचरण के परिणामस्वरूप सत्कर्म करने वालों को उनके उत्तम फल प्राप्त होते हैं— वह घड़ी वास्तव में मंगलकारी होती है।"

"ऐसे शुभ क्षणों का उत्सव मनाने योग्य होता है, वह घड़ी आनंदमयी होती है, वह समय कल्याणकारी और सुहावना होता है।"

शुभ-कर्मों से जीवन में समृद्धि

"वे धन्य हैं, जो इन पुण्य फलों का अनुभव करते हैं और जिनके जीवन में इस समृद्धि का वास होता है।"

"अतः, भिक्षुओ! तुम भी अपने स्वजनों सहित शुभ-कर्मों के द्वारा जीवन में सुख और आरोग्यता प्राप्त करो तथा सत्पथ की समृद्धियों को प्राप्त कर जीवन को सार्थक बनाओ।"

शुभ संकल्पों की अनिवार्यता

श्रावस्ती के जेतवन विहार में निवास करते समय तथागत ने भिक्षुओं को उपदेश देते हुए कहा—

"भिक्षुओ! पवित्र और आनंदमय जीवन व्यतीत करने के लिए शुभ संकल्पों को धारण करना और उनका अनुशीलन करना परम आवश्यक है।"

"मैं तुम्हें बताऊँगा कि वे कौन-से संकल्प हैं, जिन्हें ग्रहण कर तुम अपने जीवन को शुद्ध और मंगलकारी बना सकते हो।"

शुभ संकल्पों का स्वरूप

1. "मैं अपने माता-पिता की आजीवन सेवा और सहायता करूँगा।"
2. "अपने कुल के मुखिया का श्रद्धापूर्वक आदर करूँगा।"
3. "सदैव मधुर भाषी बनकर रहूँगा और किसी के विषय में कटु वचन नहीं बोलूँगा।"

4. "स्वार्थपरता के दोष से मुक्त होकर, निर्मल हृदय से दान करूंगा।"
5. "प्राप्त धन-सम्पत्ति का उपभोग केवल स्वयं के लिए नहीं, बल्कि उचित रूप से याचना करने वालों को भी उसका अंश प्रदान करके करूंगा।"
6. "अपने जीवनपर्यंत क्रोध से दूर रहूँगा और यदि कभी क्रोध उत्पन्न होगा, तो शीघ्रता से उसे शांत कर लूँगा।"

शुभ संकल्पों का परिणाम

"हे भिक्षुओ! यदि तुम इन सात संकल्पों को अपने मन में धारण करोगे और इनके अनुरूप आचरण करोगे, तो तुम्हें न केवल आंतरिक सुख की प्राप्ति होगी, बल्कि तुम्हारा जीवन भी पवित्रता और शांति की उच्चतम अवस्था को प्राप्त कर सकेगा।"

निष्कर्ष : डॉ. अंबेडकर का बौद्ध दर्शन के प्रति झुकाव केवल धार्मिक विश्वास नहीं, बल्कि एक सामाजिक-नैतिक आंदोलन था। उन्होंने बौद्ध धर्म में वह सारतत्त्व देखा, जो मनुष्य को जाति और भेदभाव से ऊपर उठाकर समानता और गरिमा का जीवन प्रदान करता है। इस पाठ में बुद्ध के उपदेशों के माध्यम से जो सिद्धांत प्रस्तुत किए गए हैं, वे आज भी प्रासंगिक हैं। मनुष्य के पतन के कारणों में असदाचार, आलस्य, और संबंधों की उपेक्षा को चिह्नित करना यह दर्शाता है कि नैतिक पतन व्यक्ति और समाज दोनों के लिए घातक है। बुद्ध द्वारा वर्णित चार प्रकार के मनुष्यों का वर्गीकरण—स्वार्थी, परोपकारी, निष्क्रिय, और संतुलित—एक गहन मनोवैज्ञानिक अध्ययन प्रस्तुत करता है। इसमें स्पष्ट है कि सच्ची मानवीय उन्नति तभी संभव है जब व्यक्ति स्वयं के साथ-साथ समाज के कल्याण हेतु भी प्रयास करे। यह दृष्टिकोण आधुनिक युग में "सामाजिक उत्तरदायित्व" की अवधारणा से साम्य रखता है। अंबेडकर का यह विचार कि धर्म को मनुष्य की गरिमा और समानता का आधार होना चाहिए, आज भी जातिगत भेदभाव और सामाजिक विषमता से जूझते भारतीय समाज के लिए मार्गदर्शक है। शुभ कर्मों और संकल्पों पर जोर देने का उद्देश्य व्यक्ति के आंतरिक और बाह्य जीवन में सामंजस्य स्थापित करना है। दान, शील, और संयम जैसे गुण न केवल व्यक्तिगत शांति बल्कि सामूहिक समृद्धि का आधार हैं। बुद्ध के अनुसार, शुभ क्षणों का चयन और उनका सदुपयोग ही मनुष्य को सुखी और समृद्ध जीवन की ओर ले जाता है। यह शिक्षा आज के भौतिकवादी युग में आध्यात्मिक संतुलन बनाए रखने की प्रेरणा देती है।

निष्कर्षतः, डॉ. अंबेडकर के विचार और बुद्ध के उपदेश दोनों ही मानवीय मूल्यों, सामाजिक न्याय, और नैतिकता पर केंद्रित हैं। ये शिक्षाएँ न केवल ऐतिहासिक दस्तावेज़ हैं, बल्कि वर्तमान सामाजिक

चुनौतियों—जैसे असमानता, भ्रष्टाचार, और नैतिक पतन—के समाधान हेतु एक रोडमैप प्रदान करती हैं। इन्हें अपनाकर ही एक समतामूलक और करुणाशील समाज की रचना संभव है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अंबेडकर, भीमराव रामजी। *बुद्ध और उनका धम्म*। सिद्धार्थ प्रकाशन, 1957।
2. अंबेडकर, भीमराव रामजी। *जाति का विनाश*। नवयान प्रकाशन, 2014।
3. अंबेडकर, भीमराव रामजी। *बुद्ध या कार्ल मार्क्स*। महाराष्ट्र सरकार, डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर: लेखन और भाषण, खंड 3, महाराष्ट्र सरकार, 1987।
4. अंबेडकर, भीमराव रामजी। *शूद्र कौन थे? इंडो-आर्यन समाज में वे चतुर्थ वर्ण कैसे बने*। थैकर एंड कंपनी, 1946।
5. अंबेडकर, भीमराव रामजी। *अछूत कौन थे और वे अछूत क्यों बने?* महाराष्ट्र सरकार, डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर: लेखन और भाषण, महाराष्ट्र सरकार।
6. बुद्ध। *धम्मपद*। अनुवादक नारद थेर, बौद्ध प्रकाशन सोसाइटी, 1993।
7. बुद्ध। *अंगुत्तर निकाय*। अनुवादक भिक्खु बोधि, द न्यूमेरिकल डिस्कोर्सेज ऑफ द बुद्ध: ए कम्प्लीट ट्रांसलेशन ऑफ द अंगुत्तर निकाय, विजडम पब्लिकेशंस, 2012।
8. बुद्ध। *दीघ निकाय: बुद्ध के दीर्घ उपदेश*। अनुवादक मॉरिस वॉल्श, विजडम पब्लिकेशंस, 1995।
9. बोधि, भिक्खु। *बुद्ध के वचनों में: पालि निकायों के उपदेशों का संकलन*। विजडम पब्लिकेशंस, 2005।
10. राहुल सांकृत्यायन। *बुद्धचर्या*। किताब महल, 1956।